हिंदी दैनिक

उदय समाचार

एक नई सोच

वर्ष : 01 अंक : 209 कानपुर, बुधवार 27 जुलाई 2022 पृष्ठ :4 मूल्य : 2 रूपये

■ कानपुर बार एसोसिएशन महामंत्री से मारपीट, कोतवाली में वकीलों ने किया हंगामा

पीएम मोदी ने श्रीलंका के नए राष्ट्रपति को भेजा बधाई पत्र, बोले- हम मिलकर काम करने को उत्सुक

भीषण आर्थिक संकट से जूझ रहे श्रीलंका के नए राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। पीएम मोदी ने श्रीलंका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे को उनके चुनाव पर बधाई पत्र भेजा और कहा, कि भारत लोकतांत्रिक साधनों के जरिये स्थिरता और आर्थिक सुधार के लिए श्रीलंकाई लोगों का समर्थन करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने श्रीलंका को पुराने रिश्तों और संबंधों की भी याद दिलाई। उन्होंने कहा, कि वह भारत और श्रीलंका के बीच सदियों पुराने घनिष्ठ रिश्तों और मैत्रीपूर्ण संबंधों को मजबूत करने के लिए राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे के साथ मिलकर काम करने को उत्सुक है। उल्लेखनीय है कि, हाल के महीनों में श्रीलंका भारी आर्थिक संकट से जूझ रहा है। श्रीलंका के इतिहास में इससे पहले कभी वहां की जनता इस तरह विरोध प्रदर्शन करते सड़क पर नहीं उतरे थे, जैसा नजारा हाल के दिनों में देखने को मिला। आर्थिक संकट से त्रस्त जनता ने मौजूदा सरकार के खिलाफ जोरदार विरोध–प्रदर्शन किया। जिसके बाद वहां के पूर्व राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे को इस्तीफा देना पड़ा। गोटाबाया के इस्तीफे के बाद श्रीलंकाई संसद ने बीते हफ्ते पूर्व प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे को गोटबाया राजपक्षे के उत्तराधिकारी के रूप में चुना। देश में बढ़ते विरोध और जनता के आक्रामक रुख के बाद गोटबाया राजपक्षे मालदीव के रास्ते सिंगापुर भाग गए। सिंगापुर पहुंचकर उन्होंने इस्तीफा दिया। आपको बता दें कि, 44 वर्षों के इतिहास में पहली बार श्रीलंका की संसद ने सीधे राष्ट्रपति का चुनाव किया। इससे पहले ऐसा कभी नहीं हुआ था। आर्थिक संकट से जूझ रहे श्रीलंका को बीच मजधार में छोड़कर गोटबाया राजपक्षे देश छोड़कर भाग गए। श्रीलंका से राजपक्षे के भागने के बाद रानिल विक्रमसिंघे ने 17 जुलाई 2022 को आपातकाल की घोषणा कर दी थी। बता दें कि, श्रीलंका के नए राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे की नियुक्ति के बाद देश की संसद का पहला सत्र कल यानी बुधवार को बुलाया गया है।

करगिल दिवस पर सीएम योगी ने शहीदों को किया नमन, बोले- युद्ध भारत पर थोपा गया था

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि करगिल युद्ध भारत पर पाकिस्तान ने जबरन थोपा था। मई 1999 में कारगिल युद्ध प्रारंभ हुआ था और 26 जुलाई 1999 को यानी आज ही के दिन इस युद्ध में भारत की विजय की घोषणा हुई थी। मंगलवार को करगिल स्मृति वाटिका में आयोजित कार्यक्रम में मुख्यमंत्री ने कहा कि इस विजय के साथ पाकिस्तान पूरी दुनिया में पाकिस्तान का चेहरा चरित्र सामने आ गया। दुनिया जान गई कि वह भारत के अंदर कैसे घुसपैठ करता है, भारत पर युद्ध जबरन थोपा है, कैसे पाकिस्तान पूरी दुनिया में एक सिरदर्द बना हुआ है। मुख्यमंत्री ने यहां नगर निगम की ओर से आयोजित कार्यक्रम में करगिल युद्ध के दौरान सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों को नमन किया। उनके परिवारों को सम्मानित किया। कार्यक्रम में उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक, मेयर सयुंक्ता भाटिया और पूर्व उप मुख्यमंत्री दिनेश शर्मा भी मौजूद थे।

जेपी नड्डा बोले- 2014 तक भारतीय सेना 20 साल पीछे थी, मोदी सरकार में बदल गए हालात

भाजपा मुख्यालय में मंगलवार को कारगिल विजय दिवस पर एक खास कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा कि हमने 1971 में बांग्लादेश के रूप में वो हासिल किया, जो दूसरे विश्व युद्ध में किसी को हासिल नहीं हो पाया। 2014 तक भारतीय सेना गोला बारूद, नवीनीकरण, आधुनिकरण के मामले में 20 साल पीछे थी। भारतीय सशस्त्र बलों के पास आधुनिक गोला–बारूद, बुलेटप्रूफ जैकेट और कई अन्य चीजों की कमी थी।

उस समय का नेतृत्व क्या कर रहा था? उस दौरान कई रक्षा सौदे घोटाले हुए थे। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के 8 वर्षों में 36 राफेल लड़ाकू विमान, 28 अपाचे हेलीकॉप्टर व कई और खरीदे गए हैं। अब भारत आयात के बजाय बुलेटप्रूफ जैकेट का निर्यात कर रहा है। हमला करो और फिर हमें रिपोर्ट करो अब यह नीति है।

पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने शेयर किया पीएम मोदी का पत्र, कहा- मेरे मन को छू लिया

देश के पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद राष्ट्र्पति भवन से विदा हुए हैं। उनकी जगह द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति पद की शपथ ली है। इसी बीच राम नाथ कोविंद ने अपने आधिकारिक ट्विटर हैंडल से पीएम मोदी द्वारा लिखे गए एक पत्र को शेयर किया है। इस पत्र में प्रधानमंत्री मोदी ने देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर रहते हुए पूर्व राष्ट्रपति के कार्यकाल की तारीफ की है। उन्होंने यह भी लिखा कि आपका मेरी मां से मिलना और उनसे बात करना बेहद खास था। दरअसल, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दो दिन पहले पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को पत्र लिखा था। इस पत्र को शेयर करते हुए पूर्व राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने लिखा कि पीएम मोदी के इस पत्र ने मेरे मन को गहराई से छुआ है। मैं दयालुता और प्यार से भरे उनके शब्दों को उस सम्मान और प्यार के रूप में लेता हूं, जो देश के नागरिकों ने मुझे दिए हैं। मैं आप सभी का हृदय से आभारी हूं। पीएम मोदी ने पूर्व राष्ट्रपति को लिखे इस पत्र में जिक्र किया है कि बतौर प्रथम नागरिक आपने देश के सबसे कमजोर व्यक्ति की चिंता की। उन्होंने राम नाथ कोविंद को शुभकामनाएं देते हुए लिखा कि आपका मेरी मां से मिलना और उनसे बात करना मेरे लिए बेहद खास था। पीएम ने देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर रहते हुए पूर्व राष्ट्रपति के कार्यकाल की भी जमकर तारीफ की है। उन्होंने आगे लिखा कि आपने अपने कार्यकाल के दौरान उच्च मानक स्थापित किए। मुझे गर्व है कि मैंने आपके प्रधानमंत्री के रूप में काम किया। देश के राष्ट्रपति के रूप में आपका कार्यकाल ईमानदारी और प्रदर्शन, संवेदनशीलता और सेवा की भावना से ओतप्रोत रहा। मैं पूरे देश की ओर से राष्ट्रपति के रूप में आपके शानदार कार्यकाल और एक लंबे सार्वजनिक जीवन के लिए आपको बधाई देता हूं। गौरतलब है कि भारत के 14वें राष्ट्रपति के रूप में रामनाथ कोविंद का कार्यकाल 24 जुलाई को समाप्त हो गया। द्रौपदी मुर्मू ने देश की 15वीं राष्ट्रपति के रूप में 25 जुलाई को अपना पदभार ग्रहण कर लिया। रामनाथ कोविंद ने 25 जुलाई, 2017 को भारत के राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण किया था। 23 जुलाई को उनके सम्मान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रात्रि भोज का भी आयोजन किया था।

उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद बोले- पीएम मोदी नवयुग के निर्माता, राहुल गांधी को ईमानदारी का रास्ता नापसंद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सीएम से लेकर बतौर पीएम तक के कार्यकाल के 20 साल पूरे होने पर अलीगढ़ में आयोजित मोदी एट द रेट कार्यक्रम को उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने संबोधित किया। इसमें उन्होंने पीएम मोदी को नवयुग का निर्माता बताया। कहा कि ऐसा नेता धरती पर कभी–कभी आता है। नरेंद्र मोदी ने अपने 12 साल के बतौर मुख्यमंत्री के कार्यकाल और 8 साल के प्रधानमंत्री कार्यकाल में एक भी दिन का भी अवकाश नहीं लिया। उन्होंने देश की जनता के लिए समर्पित होकर कार्य किया है। दुनिया में ऐसा कोई दूसरा शासक नहीं है कि जिस ने मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के रूप में 20 साल शासन किया हो। आज पीएम मोदी की वह ख्याति है कि देश के गांव–गांव का बच्चा पहचानता है। प्रधानमंत्री के 8 साल के कार्यकाल में देश का हर व्यक्ति उनके द्वारा चलाई गई किसी न किसी योजना से लाभान्वित हुआ है, इसलिए वह उन्हें पहचानता है। चाहे वह आयुष्मान स्वास्थ्य योजना हो, उज्जवला योजना, जन धन योजना या मुफ्त राशन वितरण योजना। किसी न किसी योजना से हर व्यक्ति जुड़ा हुआ है। कार्यक्रम का आयोजन अलीगढ़ के रघुनाथ पैलेस गेस्ट हाउस में हुआ। उपमुख्यमंत्री ने आगे कहा कि पीएम मोदी द्वारा समय–समय पर किए जाने वाले अच्छे कार्यों का विपक्षी दल विरोध करते रहते है, लेकिन प्रधानमंत्री देश की जनता के लिए जो हितकारी होता है उस कार्य को करते हैं। कोरोना जैसी बीमारी के दौरान देश के वैज्ञानिकों ने कड़ी मशक्कत कर वैक्सीन बनाई, वहीं विपक्षी दलों के नेताओं में चाहे राहुल हों या अखिलेश उन्होंने इसे भाजपा की वैक्सीन बताया। पिछली सरकार के कार्यकाल में विदेशी माल से बाजार पटे पड़े रहते थे। बाजारों में दिवाली पर लाइट वाली झालरें और होली पर पिचकारियां चाइना की बिकतीं थीं। प्रधानमंत्री ने सिर्फ यह कहा कि आप लोग देश में बना सामान प्रयोग करें आज देश की जनता इस ओर अग्रसर है। इससे देश के कारीगरों की आमदनी भी बढ़ी है। कहा कि आज भारत 78 परसेंट खिलौनों का निर्यात कर रहा है। आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने के लिए लोगों से आह्वान किया तो उसमें क्या गलत है? उन्होंने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के तहत पीएम ने यूपी के प्रत्येक लोकसभा क्षेत्र में 75 अमृत सरोवर बनाने का आह्वान किया है। उस पर काम चल रहा है। 15 अगस्त तक अमृत सरोवर तैयार हो जाएंगे।

इस दौरान वह अयोध्या में श्रीराम मंदिर निर्माण, स्वच्छता अभियान समेत अन्य पर मुद्दों पर भी बोले। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मोर्य ने कहा कि राहुल गांधी को ईमानदारी का रास्ता पसंद नहीं है। वह मोदी सरकार द्वारा लगाए गए टैक्स को गब्बर सिंह टैक्स बताते हैं, उन्हें पूछताछ के लिए बुला लिया गया तो पूरी कांग्रेस पार्टी इसका विरोध करती है।

सीएम केजरीवाल ने सोमनाथ मंदिर में की पूजा-अर्चना

जहरीली शराब पीने से हुई लोगों की मौत पर जताया दुख

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने मंगलवार को गुजरात में, वेरावल शहर के निकट स्थित प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर में पूजा–अर्चना की । राज्य में इस साल के आखिर में विधानसभा चुनाव होने हैं । आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक ने मंदिर के बाहर पत्रकारों से कहा कि उन्होंने देश की प्रगति और लोगों की भलाई के लिए प्रार्थना की. उन्होंने राज्य के बोटाद कस्बे में कथित तौर पर जहरीली शराब पीने से लोगों की मौत पर भी दुख जताया । सीएम केजरीवाल ने कहा, मैंने गुजरात की प्रगति, हमारे देश की प्रगति, शांति और लोगों की भलाई के लिए प्रार्थना की. दिवंगत आत्माओं को (शराब त्रासदी के बाद) शांति मिले और जो वर्तमान में अस्पतालों में भर्ती हैं, वे जल्द से जल्द स्वस्थ हों ।

इसके बाद आप नेता व्यापारियों के साथ बैठक करने राजकोट रवाना हो गए । आप ने एक विज्ञप्ति में कहा कि राजकोट से वह भावनगर के एक अस्पताल का दौरा करेंगे जहां कुछ लोगों को जहरीली शराब पीने के बाद भर्ती कराया गया था.

केजरीवाल ने सोमवार को गुजरात में जहरीली शराब की घटना को दुर्भाग्यपूर्ण करार दिया था और आरोप लगाया था कि शराबमुक्त राज्य में अवैध शराब बेचने वाले लोग राजनीतिक संरक्षण का आनंद ले रहे हैं. उन्होंने अवैध शराब की बिक्री से अर्जित धन की जांच की भी मांग की ।

सम्पादकीय

चेतावनी है प्रकृति का कोप

मौसम विज्ञान विभाग ने मई के आखिरी दिन इस साल देश में सामान्य से अधिक मानसूनी बारिश की संभावना जतायी थी, तो न सिर्फ किसानों में खुशी की लहर दौड़ गयी थी, बल्कि बंपर पैदावार से महंगाई पर अंकुश की उम्मीदें भी नये सिरे से हरी हो गयी थीं. दीर्घकालिक औसत के 103 प्रतिशत बारिश के अनुमान के साथ यह दावा भी किया गया था कि यह लगातार चौथा साल होगा, जब देश में मानसून सामान्य रहेगा.

लेकिन ये भविष्यवाणियां सही साबित नहीं हुईं और मानसून इतना असामान्य हो गया है कि देश के कुछ राज्य अतिवृष्टि के शिकार होकर भीषण बाढ़ की समस्या से दो–चार हैं, तो अनेक राज्यों में सूखे जैसे हालात पैदा हो गये हैं. देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश की बात करें, तो इसके कोई तीन दर्जन जिले भयंकर सूखे की चपेट में हैं.

खरीफ की फसलों की बुवाई व रोपाई आदि के लिहाज से अति महत्वपूर्ण जुलाई का महीना खत्म होने को है, लेकिन इनमें से कई जिलों में सामान्य की पांच फीसदी बारिश भी नहीं हुई है. सामान्य मानसून की भविष्यवाणी कर चुके मौसम विभाग के ही आंकड़ों के अनुसार कई जिले ऐसे हैं, जहां अभी तक की बारिश से जमीन में हल चलाने लायक नमी भी नहीं आ पायी है. प्रदेश के ज्यादातर जिलों में बारिश की मात्रा 20 फीसदी का आंकड़ा भी नहीं छू पायी है. नतीजतन अभी तक प्रदेश की कुल खेती योग्य भूमि के चालीस प्रतिशत में भी बुआई नहीं हो पायी है. इसके मद्देनजर प्रदेश के कृषि निदेशालय ने अधिकारियों को अलर्ट जारी कर हालात पर पैनी निगाह रखने को कहा है.

कमजोर मानसून के दूसरे पहलू को देखें, तो समस्या इससे भी ज्यादा विकट और किसी एक फसल तक सीमित न होकर दीर्घकालिक दिखती है. हमारे देश में जिस मानसून को वर्षा ऋतु का अग्रदूत मानकर उसकी समारोहपूर्वक अगवानी की परंपरा रही है और उसके आगमन पर उत्सव मनाये जाते रहे हैं, अपनी संभावनाओं के सारे आकलनों व भविष्यवाणियों को नकारकर वह अब इस कदर कहीं डराने और कहीं तरसाने क्यों लगा है? जैसा कि वैज्ञानिक कहते हैं, अगर यह जलवायु परिवर्तन के कारण हो रहा है, तो क्या इसके लिए हम खुद ही दोषी नहीं हैं? क्या यह प्रकृति के काम में मनुष्य के बेजा दखल के खिलाफ प्रकृति की नाराजगी का संकेत नहीं है और देश के कई राज्यों में बाढ़ के पानी में डूबे गांव–शहर उसकी इस नाराजगी की बानगी नहीं है? गौरतलब है कि प्रकृति की यह नाराजगी मानसून को ही असामान्य नहीं बना रही है.

इसके चलते कहीं भूस्खलन हो रहे हैं, कहीं हिमस्खलन, तो कहीं एक के बाद हो रही बादल फटने की घटनाएं भी लोगों को आतंकित कर रही हैं. हाल में ही अमरनाथ यात्रा के दौरान घटी त्रासदी ने बड़ी मानवीय क्षति की, तो पहाड़ों के दरकने की घटनाएं भी लगातार सामने आ रही हैं. आकाशीय बिजली से मरने वालों का आंकड़ा, क्या उत्तर प्रदेश, क्या बिहार और क्या झारखंड, ज्यादातर राज्यों में बढ़ता जा रहा है.

क्या फिर भी कोई कह सकता है कि अभी यह सवाल पूछने का वक्त नहीं आया है कि प्रकृति का यह रौद्र रूप क्यों सामने आने लगा है या जीवनदायिनी मानसूनी बारिश क्यों जानलेवा सिद्ध होने लगी है? क्यों लोग प्रकृति की रौद्रता के सामने लाचार नजर आ रहे हैं? सच तो यह है कि ये हालात हमें चेता रहे हैं कि उन प्रकृति विरोधी राजनीतिक व आर्थिक फैसलों पर फौरन लगाम लगायें, जो ऐसे कारकों को बढ़ावा दे रहे हैं, जिनसे धरती का तापमान बढ़ रहा है, यानी जलवायु परिवर्तन गंभीर होता जा रहा है.

इन कारकों में एक हमारी विलासितापूर्ण जीवनशैली भी है. इस शैली के लोभ में हमने विकास के जिस मॉडल को चुना है, उसमें प्रदूषण उगलते कारखाने, सड़कों पर वाहनों के सैलाब, वातानुकूलन की संस्कृति, जंगलों के कटान व पहाड़ों से निर्मम व्यवहार ने ग्लोबल वार्मिंग को बढ़ाने और प्रकृति को उकसाने में अहम भूमिका निभायी है. क्या आश्चर्य कि इससे ऋतु चक्र में अप्रत्याशित व अनपेक्षित परिवर्तन हो रहे हैं और हमें विकास के नाम पर पिछले दशकों में प्रकृति से बरती गयी क्रूरता का खमियाजा भुगतना पड़ रहा है!

महात्मा गांधी कहते थे कि हमारी प्रकृति धरती पर रहने वाले हर व्यक्ति की जरूरतें पूरी कर सकती है, लेकिन वह किसी एक व्यक्ति की हवस के लिए भी कम है. उनका मतलब साफ था कि प्रकृति किसी भी तरह की विलासिता व स्वच्छंदता की, जो हवस का ही एक रूप हैं, इजाजत नहीं देती. लेकिन सारी दुनिया को अपनी मुट्ठी में कर लेने को आतुर आज का मनुष्य उनकी बतायी इस लक्ष्मण रेखा को बार–बार लांघकर प्रकृति को प्रतिकार के कदमों पर मजबूर कर रहा है.

उसका यह प्रतिकार चेतावनी है कि मनुष्य अभी भी नहीं संभला, तो उसकी आने वाली पीढ़ियों को कहीं ज्यादा भयावह हालात से गुजरना होगा. सवाल है कि अब जब वक्त हाथ से निकल जाने को है, मनुष्य इस चेतावनी को सुनेगा या अपनी राह पर बढ़ते जाने की हिमाकत कर अतिवृष्टि, अनावृष्टि, हिमस्खलन, भूस्लखन, वज्रपात और तड़ितपात वगैरह के रूप में प्रकृति के बदले तेवर झेलते हुए अपने जीवन को संकट में डालने को अभिशप्त होगा?

उदय समाचार

दैनिक

स्वामी प्रकाशक व मुद्रक उदय कुशवाहा द्वारा हर्षिता प्रिंटर्स साकेत नगर कानपुर नगर (उ प्र) से छपवाकर कार्यालय - जवाहर नगर पूर्वी घाटमपुर कानपुर नगर से प्रकाशित।

संपादक

उदय कुशवाहा

Title Code - UPHIN49938

नोट- समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त लेखों एवं समाचारों की जिम्मेदारी लेखकों की होगी । सभी विवादों का न्याय क्षेत्र कानपुर न्यायालय मान्य होगा ।

मिसाइलमैन डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की पुण्यतिथि पर विशेष

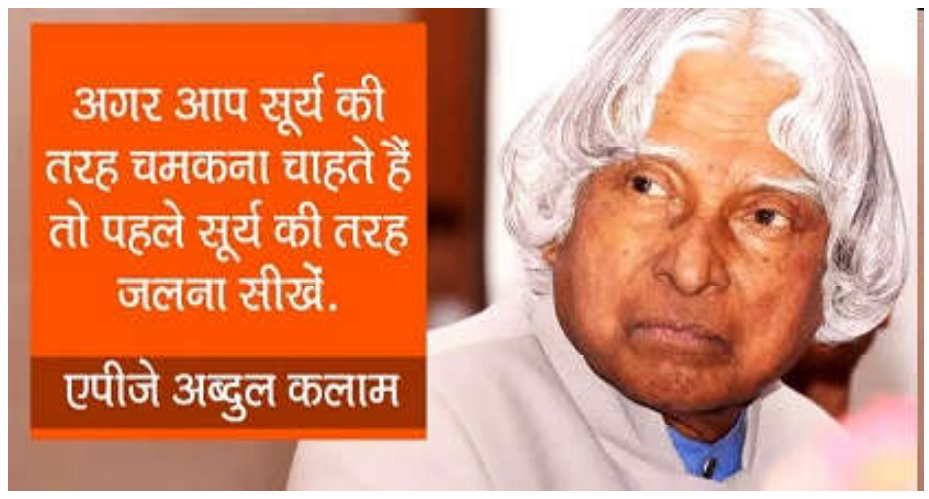

सपने वे नहीं होते, जो आपको रात में सोते समय नींद में आए बल्कि सपने वे होते हैं, जो रात में सोने ही न दें। ऐसी बुलंद सोच रखने वाले शमिसाइलमैनश अवुल पकिर जैनुलाअबदीन अब्दुल कलाम (एपीजे अब्दुल कलाम) भारतीय मिसाइल प्रोग्राम के जनक कहे जाते हैं। जब कलाम ने देश के सर्वोच्च पद यानी 11वें राष्ट्रपति की शपथ ली थी तो देश के हर वैज्ञानिक का सर फख्र से ऊंचा हो गया था। वे मिसाइलमैन और जनता के राष्ट्रपति के रूप में लोकप्रिय हुए। आसमान की ऊंचाइयों को छूने के लिए हवाई जहाज और अन्य साधनों से भी जरूरी चीज है हौसला। हौसला आपकी सोच को वह उड़ान देता है जिसका शिखर कामयाबी की चोटी पर है। कामयाबी के शिखर तक पहुंचने की आपने यूं तो हजारों कहानियां पढ़ी होंगी लेकिन ऐसी ही एक जीती–जागती कहानी है पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम की। भारत के पूर्व राष्ट्रपति, जिन्हें दुनिया शमिसाइलमैनश के नाम से भी जानती है, का जन्म 15 अक्टूबर 1931 को रामेश्वरम् (तमिलनाडु) में हुआ था। एपीजे अब्दुल कलाम का पूरा नाम डॉक्टर अबुल पाकिर जैनुलाअबदीन अब्दुल कलाम था। कलाम अपने परिवार में काफी लाड़ले थे, लेकिन उनका परिवार छोटी–बड़ी मुश्किलों से हमेशा ही जूझता रहता था। उन्हें बचपन में ही अपनी जिम्मेदारियों का एहसास हो गया था। उस वक्त उनके घर में बिजली नहीं हुआ करती थी और वे केरोसिन तेल का दीपक जलाकर पढ़ाई किया करते थे। अब्दुल कलाम मदरसे में पढ़ने के बाद सुबह रामेश्वरम् के रेलवे स्टेशन और बस अड्डे पर जाकर समाचार पत्र एकत्र करते थे। अब्दुल कलाम अखबार लेने के बाद रामेश्वरम् शहर की सड़कों पर दौड़–दौड़कर सबसे पहले उसका वितरण करते थे। बचपन में ही आत्मनिर्भर बनने की तरफ उनका यह पहला कदम रहा। कलाम जब मात्र 19 वर्ष के थे, तब द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिका को भी उन्होंने महसूस किया। युद्ध की आग रामेश्वरम् के द्वार तक पहुंच गई थी। इन परिस्थितियों में भोजन सहित सभी आवश्यक वस्तुओं का अभाव हो गया था। कलाम एयरोस्पेस टेक्नोलॉजी में आए, तो इसके पीछे उनके 5वीं कक्षा के अध्यापक सुब्रह्मण्यम अय्यर की प्रेरणा जरूर थी। अध्यापक की बातों ने उन्हें जीवन के लिए एक मंजिल और उद्देश्य भी प्रदान किया।

अभियांत्रिकी की शिक्षा के लिए उन्होंने मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में दाखिला लिया। वहां इन्होंने एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग में अध्ययन किया। 1962 में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में आए। डॉक्टर अब्दुल कलाम को प्रोजेक्ट डायरेक्टर के रूप में भारत का पहला स्वदेशी उपग्रह (एसएलवी तृतीय) प्रक्षेपास्त्र बनाने का श्रेय हासिल है। अब्दुल कलाम भारत के मिसाइल कार्यक्रम के जनक माने जाते हैं। उन्होंने 20 साल तक भारतीय अंतरिक्ष शोध संगठन यानी इसरो में काम किया और करीब इतने ही साल तक रक्षा शोध और विकास संगठन यानी डीआरडीओ में भी। वे 10 साल तक डीआरडीओ के अध्यक्ष रहे। साथ ही उन्होंने रक्षामंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार की भूमिका भी निभाई। इन्होंने अग्नि एवं पृथ्वी जैसी मिसाइल्स को स्वदेशी तकनीक से बनाया था। 18 जुलाई 2002 को कलाम भारत के 11वें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे।

इन्हें भारतीय जनता पार्टी समर्थित एनडीए घटक दलों ने अपना उम्मीदवार बनाया था जिसका वामदलों के अलावा समस्त दलों ने समर्थन किया था। 25 जुलाई 2002 को उन्होंने संसद भवन के अशोक कक्ष में राष्ट्रपति पद की शपथ ली थी। 25 जुलाई 2007 को उनका कार्यकाल समाप्त हो गया था।

ऐसे भारतीय मिसाइल प्रोग्राम के जनक और जनता के राष्ट्रपति के रूप में लोकप्रिय हुए पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम का 27 जुलाई 2015 को शिलांग के आईआईएम में एक व्याख्यान देने के दौरान गिरने के बाद निधन हो गया।

भाजपा के संबित पात्रा का आरोप - कांग्रेस को लगता है, 'डकैती करना' उसका हक है और कोई सवाल भी न पूछे

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय प्रवक्ता संबित पात्रा ने मंगलवार को नेशनल हेराल्ड मामले में सोनिया गांधी से प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की पूछताछ के विरोध में प्रमुख विपक्षी पार्टी के प्रदर्शन को लेकर कांग्रेस पर आरोप लगाया है. उन्होंने अपने आरोप में कहा है, कांग्रेस को लगता है कि डकैती करना उसका हक है और किसी को उस पर सवाल भी नहीं उठाना चाहिए. उन्होंने 'नेशनल हेराल्ड अखबार से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग के एक मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी से पूछताछ किए जाने के खिलाफ 'सत्याग्रह' करने को लेकर पार्टी की निंदा की. सोनिया गांधी मामले में उनसे पूछताछ के दूसरे दौर के लिए मंगलवार को दिल्ली में ईडी के सामने पेश हुईं.

भ्रष्टाचारी ये न सोचें कि जांच नहीं होगी

भाजपा के प्रवक्ता संबित पात्रा ने छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में भाजपा कार्यालय 'कुशाभाऊ ठाकरे परिसरश में मीडिया से बातचीत करते हुए कहा, 'मुझे कई बार लगता है कि कांग्रेस के लिए ईडी का अर्थ 'एन्टाइटलमेंट फॉर डकॉइटीश (डकैती करने का अधिकार) है. उन्हें लगता था कि डकैती करना उनका अधिकार है और किसी को उनसे सवाल नहीं करना चाहिए.

उन्होंने कहा कि भ्रष्ट लोगों को यह नहीं सोचना चाहिए कि उनके खिलाफ जांच नहीं की जाएगी.

भ्रष्टाचार को बर्दाश्त नहीं करना भाजपा का सिद्धांत

संबित पात्रा ने कहा कि भ्रष्टाचार को कतई बर्दाश्त नहीं करना भाजपा का सिद्धांत रहा है. कांग्रेस नेशनल हेराल्ड मामले में ईडी के समक्ष आज सोनिया गांधी की पेशी के खिलाफ जिस प्रकार सत्याग्रह का नाटक कर रही है, पूरा देश उसे देख रहा है.श उन्होंने कहा कि विपक्ष के पास ऐसा कोई मुद्दा नहीं बचा है, जिसे वह उठा सके.

सोनिया जी हमें कबूलनामा चाहिए, हंगामा नहीं

संबित पात्रा ने 'सत्याग्रहश करने के लिए कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा कि सोनिया जी हमें कबूलनामा चाहिए, हंगामा नहीं. पात्रा ने कहा कि कानून के तहत जांच एक उचित प्रक्रिया है. देश में कानून अपना काम करेगा और एक तार्किक निष्कर्ष पर पहुंचेगा. यह भारत की खूबसूरती है. उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल के मंत्री पार्थ चटर्जी के पास से 21 करोड़ रुपए नकद राशि जब्त की गई. दिल्ली में आम आदमी पार्टी के मंत्री सत्येंद्र जैन के पास से नकदी मिली और अदालत ने 5,000 करोड़ रुपए के गबन वाले नेशनल हेराल्ड मामले में कड़ी टिप्पणियां कीं.

सोनिया-राहुल से की जाएगी स्वाभाविक पूछताछ

पात्रा ने कहा कि तो भाजपा देश से सवाल करती है कि क्या इन मामलों की जांच नहीं होनी चाहिए? पात्रा ने कहा कि कांग्रेस नेताओं सोनिया गांधी और राहुल गांधी के खिलाफ 5,000 करोड़ रुपये के भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं जो उनसे स्वाभाविक रूप से पूछताछ की जाएगी.

उद्धव गुट की याचिका पर सुनवाई के लिए SC सहमत, जानें किसके हाथ में होगा शिवसेना का नेतृत्व

विद्रोह के कारण गिरी उद्धव ठाकरे की सरकार

महाराष्ट्र में उद्धव के नेतृत्व वाली महा विकास आघाड़ी (एमवीए) सरकार एकनाथ शिंदे और 39 अन्य विधायकों के शिवसेना नेतृत्व के खिलाफ विद्रोह करने के कारण गिर गई थी. शिवसेना, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) और कांग्रेस एमवीए के घटक दल हैं. शिंदे ने बाद में राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली और भारतीय जनता पार्टी के नेता देवेंद्र फडणवीस उपमुख्यमंत्री बने.

उच्चतम न्यायालय महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले शिवसेना गुट की याचिका पर निर्वाचन आयोग की कार्यवाही के खिलाफ दाखिल की गई उद्धव ठाकरे समूह की याचिका पर एक अगस्त को सुनवाई करने के लिए मंगलवार को सहमत हो गया. शिंदे के नेतृत्व वाले गुट ने स्वयं को असली शिवसेना के तौर पर मान्यता दिए जाने का अनुरोध किया है.

सिब्बल ने की कार्रवाई पर रोक लगाने की मांग

प्रधान न्यायाधीश एन.वी. रमण, न्यायमूर्ति कृष्ण मुरारी और न्यायमूर्ति हिमा कोहली की एक पीठ से, उद्धव ठाकरे गुट की ओर से पेश हुए वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने कहा कि निर्वाचन आयोग के समक्ष चल रही कार्यवाही पर रोक लगाने की जरूरत है,

क्योंकि इससे मामले में यहां सुनवाई प्रभावित होगी. शीर्ष अदालत ने कहा कि वह लंबित याचिकाओं के साथ ही इस याचिका पर एक अगस्त को सुनवाई करेगी.

दोनों गुटों को 8 अगस्त तक दस्तावेज जमा करने का निर्देश

गौरतलब है कि निर्वाचन आयोग ने हाल ही में शिवसेना के दोनों प्रतिद्वंद्वी गुटों को पार्टी और उसके चुनाव चिह्न (धनुष और बाण) पर अपने–अपने दावों के समर्थन में आठ अगस्त तक दस्तावेज जमा करने का निर्देश दिया था. निर्वाचन आयोग के सूत्रों ने बताया था कि दोनों पक्षों को दस्तावेज जमा करने के लिए कहा गया है, जिसमें पार्टी की विधायी तथा संगठनात्मक शाखा के समर्थन पत्र और प्रतिद्वंद्वी गुटों के लिखित बयान शामिल हैं.

उद्धव ठाकरे ने बागी नेताओं पर बोला हमला

शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे ने बीते दिन पार्टी के बागी नेताओं की तुलना पेड़ के 'सड़े हुए पत्तोंश से की थी उन्होंने कहा कि चुनाव के बाद पता चल जाएगा कि लोग किसका समर्थन करते हैं.

मुख्यमंत्री पद से पिछले महीने इस्तीफा देने के बाद शिवसेना के मुखपत्र 'सामनाश के साथ पहले साक्षात्कार में उद्धव ने कहा कि पार्टी के कुछ नेताओं पर अत्यधिक भरोसा करना उनकी गलती थी.

पटना में मिला मंकीपॉक्स का पहला संदिग्ध मरीज, बीमार के घर पहुंची डॉक्टरों की टीम, अलर्ट पर विभाग

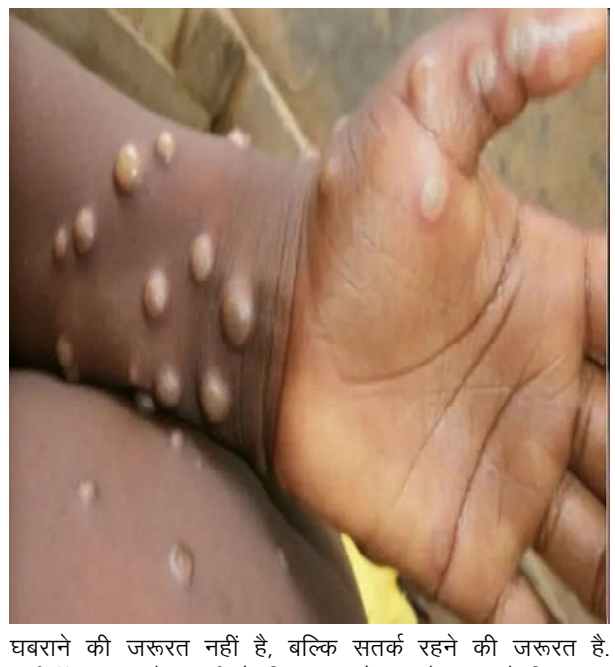

घबराने की जरूरत नहीं है, बल्कि सतर्क रहने की जरूरत है. मंकीपॉक्स जानलेवा नही हैं. फिलहाल सैंपल को जांच के लिए पूना भेजा जायेगा.

बिहार में भी मंकीपॉक्स संक्रमण ने दस्तक दे दिया है. पटना में इस संक्रमण से पीड़ित एक संदिग्ध महिला मरीज की पहचान हुई है. पीड़ित महिला पटना सिटी के गुरहट्टा इलाके की रहनेवाली है. मंकीपॉक्स के इस पहले संदिग्ध मामले के मिलने से स्वास्थ्य विभाग में हड़कंप मच गया है. हालांकि विभाग इसे अब तक संदिग्ध मान रहा है, लेकिन डॉक्टरों का कहना है कि महिला में मंकीपॉक्स के सभी लक्षण मिले हैं. वैसे पीएमसीएच की टीम सैम्पल इक्टठा करने के लिए गुरहट्टा स्थित महिला के आवास पर पहुंच गयी है. स्वास्थ्य विभाग की टीम पूरे मामले की जांच कर रही है. भारत में मंकीपॉक्स के अब तक 4 मरीज सामने आये हैं. दिल्ली में एक और केरल में तीन मंकीपॉक्स के मरीज मिले हैं.

मंकीपॉक्स को लेकर बिहार में भी अलर्ट

देश के साथ साथ मंकीपॉक्स को लेकर बिहार में भी अलर्ट है. केंद्र सरकार से मिली गाइडलाइन को सभी चिकित्सा प्रभारियों को भेजा जा चुका है. गाइडलाइन के मुताबिक सभी चिकित्सक, आशा और एएनएम को मंकीपॉक्स के लक्षणों के बारे में ठीक से बताने का निर्देश दिया गया है. एनएम या आशा को किसी मरीज में यह लक्षण मिले तो वो तुरंत इसकी सूचना स्वास्थ्य विभाग को दें. मंकीपॉक्स के बारे में बताया जाता है कि यह एक वायरस है जो मवेशियों से मनुष्य में फैलता है और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भी फैल सकता है. त्वचा, आंख, नाक या मुंह के माध्यम से यह वायरस मनुष्य के शरीर में प्रवेश करता है.

65 देश में कुल 16 हजार से ज्यादा मामले

65 देश में कुल 16 हजार से ज्यादा मामले सामने आये हैं. भारत में विदेशों से आने वाले पर्यटकों एवं नागरिकों पर स्वास्थ्य विभाग की कड़ी नजर है. देश के सभी एयरपोर्ट अथॉरिटी को भी सतर्क रहने का निर्देश दिया गया है. नेपाल के रास्ते भारतीय सीमा में दाखिल होने वाले विदेशी नागरिकों पर सख्त निगरानी रखने का निर्देश दिया गया है. मंकीपॉक्स वायरस का लक्षण दिखने पर विदेशी नागरिकों का सैंपल एकत्र करने का भी निर्देश दिया गया है. बॉर्डर पर मंकीपॉक्स के लक्षण वाले मरीज यदि मिलते हैं तो वहां तैनात डॉक्टरों की टीम सैंपल इक्ट्ठा कर इलाज की व्यवस्था करेगा.

ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी की घोषणा

डब्ल्यूएचओ ने मंकीपॉक्स को लेकर ग्लोबल हेल्थ इमरजेंसी की घोषणा कर दी है. मंकीपॉक्स को वैश्विक स्वास्थ्य आपातकाल घोषित किये जाने की बात सामने आते ही लोग इसे लेकर अलर्ट हो गये हैं. डब्ल्यूएचओ की माने तो शारीरिक संबंध बनाने से यह संक्रमण तेजी से फैलता है. इसे लेकर विशेष सावधानी बरतने की बात कही गयी है. सभी संदिग्धों की स्क्रीनिंग और टेस्टिंग करने का निर्देश स्वास्थ्य मंत्रालय ने दिया है.

बोले मंत्री

मंकीपॉक्स को लेकर स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि मंकीपॉक्स पर स्वास्थ्य विभाग में उच्च स्तरीय बैठक की गयी है. कहीं भी किसी में मंकीपॉक्स से जुड़े कोई भी लक्षण पाये जाते हैं, तो तुरंत उसकी जांच करायी जाये. इस बीमारी से

दो साल पहले मंदिर से चोरी हुई थी अष्टधातु की मूर्तियां, अब चोरी हुए पीतल के घंटे

कानपुर । नरवल थाना क्षेत्र में मंदिरों में चोरी की घटनाएं थम नहीं रही हैं। सोमवार रात चोरों ने प्राचीन मंदिर को अपना निशाना बना लिया। चोर यहां से पीतल के कई घंटे चोरी कर ले गए। सुबह लोगों को मंदिर से घंटा चोरी होने का पता चला तो वे आक्रोशित हो गए। आपको बताते चलें कि नरवल कस्बा में स्थित प्राचीन रावल माता मंदिर में सोमवार रात चोर दाखिल हो गए। मंदिर के भीतर टंगे पीतल के कई घंटे यहां से चोरी कर ले गए। मंदिर करीब पांच सौ पुराना है। सुबह से ही गांव के तमाम श्रद्धालु वहां जल एवं प्रसाद चढ़ाने पहुंचने लगते हैं। लिहाजा सुबह ही चोरी का पता चल गया। इसके बाद वहां ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई। ग्रामीणों द्वारा सूचना पर पहुंची नरवल पुलिस जांच में जुट गई है।ग्रामीणों ने बताया कि नरवल कस्बा में बना प्राचीन ठाकुरद्वारा मंदिर में लगभग दो वर्ष पूर्व भी प्राचीन अष्टधातु की मूर्तियां चोरी हुई थी। जिन्हें आज तक नरवल पुलिस बरामद नहीं कर सकी है। नरवल इंस्पेक्टर रामबाबू सिंह का कहना है कि मंदिर में चोरी की घटना को गंभीरता से लिया जा रहा है। जल्द उसका खुलासा किया जाएगा।

दहेज हत्या में वांछित महिला अभियुक्त को पुलिस ने किया गिरफ्तार

कानपुर । सजेती पुलिस ने दहेज हत्या में वांछित चल रही महिला अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेजा है, बताया जाता है वांछित अभियुक्तता राम श्री पत्नी स्वर्गीय बसंत लाल निवासी ग्राम गुरैयनपुवा थाना सजेती कानपुर नगर को धरमंगदपुर मोड़ कस्बा सजेती से गिरफ्तार किया गया, ज्ञात रहे महिला अभियुक्त बीते एक वर्ष से वांछित चल रही थी, वही वांछित महिला को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेजा है, महिला अभियुक्त को गिरफ्तार करने में सजेती थाना प्रभारी जनार्दन सिंह यादव, महिला थाना प्रभारी पूजा देवी, महिला कांस्टेबल पूनम, होमगार्ड श्याम नारायण सक्सेना का विशेष योगदान रहा।

कानपुर बार एसोसिएशन महामंत्री से मारपीट, कोतवाली में वकीलों ने किया हंगामा

कानपुर । बार एसोसिएशन के महामंत्री अनुराग श्रीवास्तव ने कानपुर कोतवाली में मारपीट की एफआईआर कराई। पुलिस को दिए शिकायती पत्र में बताया कि सिविल जज–2 कोर्ट में मामले की पैरवी के लिए गए थे। इस दौरान वकीलों ने उनके साथ मारपीट कर दी। चेन लूट, 22 हजार कैश लूटने और जान से मारने की धमकी समेत अन्य धाराओं में मुकदमा कराया है। महामंत्री अनुराग श्रीवास्तव ने बताया कि कोर्ट में मेरी ओर से वकील विनोद श्रीवास्तव को नियुक्त किया गया था। बहस के दौरान विवाद होने पर सूचना महामंत्री मौके पर पहुंचे। आरोप है कि बहस के दौरान ही विपक्षी वकील ओमकार बाजपेई, सुधीर बाजपेई, शरद बाजपेई समेत 8 से 10 लोगों ने हमला कर दिया। इस दौरान महामंत्री को चोट आई और उनके साथ लूटपाट भी हुई। वहीं वकीलों ने कोतवाली में भी हंगामा किया। कानपुर बार एसोसिएशन अध्यक्ष ने महामंत्री और साथी वकीलों पर हमला करने वालों अधिवक्ताओं ने सदस्यता को तत्काल प्रभाव से निरस्त कर दिया है। अध्यक्ष ने बताया कि कार्यकारिणी की बैठक में सर्वसम्मति से ये फैसला भी लिया गया है कि यूपी बार काउंसिल को भी रजिस्ट्रेशन निरस्त करने के लिए लिखा जाएगा। वहीं वकीलों के चैंबर भी सील कराए जाएंगे।

मंदिर से घंटा चोरी करते संदिग्ध व्यक्ति को मालियों ने पकड़ा

कानपुर । घाटमपुर कस्बे में स्थित कुष्मांडा देवी मंदिर में बीती रात मंदिर में रहने वाले मालियों ने संदिग्ध चोर को मंदिर में टंगे घंटा समेत रंगे हाथ पकड़ने का दावा किया है, वही पुलिस द्वारा संदिग्ध व्यक्ति को मानसिक रोगी बताया गया है, हालांकि मंदिर के मालियों ने पुलिस को शिकायत पत्र नहीं दिया है, जिसके बाद पुलिस ने संदिग्ध को मौके से छोड़ दिया, जानकारी के अनुसार घाटमपुर के कानपुर रोड स्थित कुष्मांडा देवी मंदिर में बीती देर रात मंदिर के अंदर स्थित हनुमान प्रतिमा के पास खतर पटर की आवाज सुनकर मालियों की नींद खुली तो उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति दो बड़े एवं एक छोटा घंटा खोल के लिए जा रहा हैं, आवाज सुनकर जगे मालियों ने संदिग्ध व्यक्ति को पकड़ कर पुलिस चौकी कस्बा को सौंपा, जहां पुलिस द्वारा बताया गया कि संदिग्ध व्यक्ति मानसिक विक्षिप्त है, बावजूद मालियों द्वारा कोई भी शिकायत पत्र नहीं दिया गया, जिसके बाद उसे मौके से छोड़ दिया गया, तहरीर मिलती है तो कार्रवाई की जाएगी।

डीएम ने कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय का किया औचक निरीक्षण।।

उरई–(जालौन)–जिलाधिकारी चाँदनी सिंह ने विकासखंड कदौरा स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय छौंक का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने छात्रावास के विभिन्न कक्षों का जायजा लिया। परिसर में बने शौचालय में दुर्गंधयुक्त पाए जाने पर जिलाधिकारी ने शौचालय की समुचित साफ–सफाई कराने के कड़े निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान पीने का पानी आर ओ खराब पाया गया जिसे तत्काल ठीक कराने के निर्देश दिए गए। इस दौरान उन्होंने शिक्षकों की उपस्थिति रजिस्टर छात्राओं का उपस्थिति रजिस्टर खाद सामग्री स्टॉक के स्टॉक रजिस्टर नहीं बनाए गए और खाद सामग्री व्यवस्थित ढंग से न रखने पर नाराजगी व्यक्त करते हुए संबंधित को निर्देशित किया कि खाद सामग्री को व्यवस्थित ढंग से रखा जाए खाद्य सामग्री परिसर में कितना आया कितना उपभोग हो चुका है इसकी दो दिवस के अंदर रिपोर्ट प्रस्तुत करेंगें। परिसर के अंदर समुचित साफ–सफाई व्यवस्था मेंटेनेंस आदि की व्यवस्था ना होने पर नाराजगी जाहिर कर प्रधानाचार्य को कार्यशैली में सुधार कर व्यवस्थाओं को दुरुस्त करने के निर्देश दिए।

साथ ही जिलाधिकारी ने संबंधित खंड शिक्षा अधिकारी का स्पष्टीकरण भी मांगा गया। बेसिक शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया गया कि खंड शिक्षा अधिकारी का स्पष्टीकरण दो दिवस के अंदर प्रस्तुत करें। उन्होंने कहा कि परिसर में बेहतर साफ सफाई व्यवस्था व बालिकाओं को उच्च शिक्षा प्रदान कराएंगे इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि बालिका आवागमन रजिस्टर में बच्चों की पेरेंट्स की फोटो रहे यह सुनिश्चित करें साथ ही परिसर से बच्चे कब जा रहे हैं और कब आ रहे हैं इसकी दिनांक को भी रजिस्टर में अंकित किया जाए।

फर्राटा पंखा चलाते समय युवती को लगा करंट, मौके पर मौत

फतेहपुर । जनपद के बिंदकी कोतवाली क्षेत्र में एक युवती फर्राटा पंखा चलाते समय विद्युत करंट की चपेट में आ गई जिससे उसकी दर्दनाक मौत हो गई बताते चलें कि जनपद के बिंदकी कोतवाली क्षेत्र के कोरवां गांव निवासी अनुराधा उम्र 20 वर्ष पुत्री छोटेलाल जो मंगलवार की दोपहर फर्राटा पंखा चला रही थी तभी अचानक पंखे में करंट उतर आया और युवती करंट की चपेट में आ गई जिससे उसकी दर्दनाक घटना स्थल पर मौत हो गई घटना की जानकारी होते ही परिजनों में कोहराम मच गया परिजनों ने इस घटना की सूचना स्थानीय पुलिस को दी मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है ।

भारतीय सैनिक ने फांसी लगाकर आत्महत्या का किया प्रयास, हालत गंभीर

फतेहपुर । जनपद के बकेवर थाना क्षेत्र में एक भारतीय सैनिक ने फांसी के फंदे पर झूल कर अपनी आत्महत्या करने का प्रयास कर रहा था जिसकी हालत नाजुक देख जिला अस्पताल के लिए रेफर किया गया है बताते चलें कि जनपद के बकेवर थाना क्षेत्र के भेलगांव निवासी पीआरडी जवान राजू उम्र 35 वर्ष पुत्र ओमप्रकाश जो किसी बात को लेकर फांसी के फंदे पर झूल गया यह घटना परिजनों ने देखी तो आनन–फानन रस्सी काट कर फंदे से नीचे उतारा और सरकारी स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया जहां पर चिकित्सकों ने हालत नाजुक देख जिला अस्पताल कानपुर हैलट के लिए रेफर कर दिया है ।

आकाशीय बिजली की चपेट में आई महिला, हालत गंभीर

फतेहपुर । जनपद के जहानाबाद थाना क्षेत्र में खेत में काम कर रही महिला आकाशीय बिजली की चपेट में आ गई जिससे उसकी हालत गंभीर बताई जा रही है बताते चलें कि जनपद के जहानाबाद थाना क्षेत्र के अयोध्या पुर मोहल्ला निवासी सरोज उम्र 35 वर्ष पत्नी राजेंद्र कुमार जो कि अपने खेतों में काम कर रही थी मंगलवार दोपहर गरज चमक के साथ बारिश होने लगी जिससे वह आकाशी बिजली की चपेट में आ गई और वह गंभीर रूप से झुलस गई

जानकारी होने पर परिजनों ने आनन–फानन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया जहां पर उसका इलाज किया जा रहा है चिकित्सकों ने बताया कि हालत में सुधार होने के बाद घर भेजा जाएगा ।

पिछले वर्ष हुई बारिश के चलते बाढ़ को लेकर सतर्क हुआ प्रशासन

उप जिलाधिकारी ने किया यमुना पट्टी के कई गांवों का निरीक्षण

कानपुर । घाटमपुर तहसील क्षेत्र में यमुना पट्टी में बीते वर्ष बाढ़ की चपेट में कई गांव प्रभावित हुए थे जिसको लेकर प्रशासन इस बार पहले से ही सतर्क हो गया है । बरसात के मौसम में बढ़ रही बारिश के बीच स्थानीय तहसील प्रशासन बाढ़ को लेकर सतर्क हो गया, जहां जिलाधिकारी के निर्देश पर उपजिलाधिकारी घाटमपुर अमित ओमर के द्वारा तहसील क्षेत्र के यमुना तटवर्ती गांव कटरी, काटर, गड़था, अमृतपुर का निरीक्षण किया गया, निरीक्षण के दौरान वर्तमान में ग्रामीणों की स्थित सामान्य पाई गई, फिर भी स्थानीय प्रशासन ने ग्रामीणों को सतर्क रहने एवं पानी बढ़ने पर तहसील प्रशासन को सूचना करने के लिए कहा है।

फतेहपुर जिले का अद्भुत शिव मंदिर

पूरे वर्ष लगी रहती है भक्तों की भीड़, पूरी होती हैं मन्नतें

उदय समाचार । प्रदीप कुशवाहा

फतेहपुर । जनपद में एक ऐसा अद्भुत शिव मंदिर है जहां पर सावन महीना ही नहीं पूरे वर्ष की मान्यता मानी जाती है अंग्रेजी हुकूमत से आज तक अद्भुत शिव मंदिर की मान्यता लगातार आज भी आम जनमानस उसी तरह विराजमान हैयहां शिवरात्रि और सावन मास ही नहीं बल्कि भक्तों की कतारें लगी ही रहती हैं ऐसा शिव मंदिर है, जिसमें कैदियों के द्वारा मात्र भगवान शिव के जयकारे से उनकी सजा माफ हो जाती थी. अंग्रेज सरकार भी कैदियों की माफी से परेशान हो गई थी. फतेहपुर जनपद स्थित एक ऐसा शिव मंदिर जो जिले में ही नहीं बल्कि आस–पास के कई जिलों में अपनी भव्यता एवं दिव्यता के लिए जाना जाता है. शिव मंदिर को लेकर लोगों की मान्यता है कि भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण एवं उनके दुखों का नाश होता है. जी हां हम बात कर रहे हैं सिद्ध पीठ श्री ताम्बेश्वर बाबा मंदिर की. इस मंदिर से कई अद्भुत कहानियां जुड़ी हुई हैं जिन्हें जानकार शायद आपको भी हैरानी होगी.शिव मंदिर में कैदियों को हो जाती थी सजा माफ ऐसी मान्यता है कि अंग्रेजी हुकूमत के दौरान मंदिर के समीप स्थित जिला जेल का दरवाजा मन्दिर के ठीक सामने पूर्व दिशा में स्थित था. इसके चलते जब कैदियों को पेशी के लिए ले जाया जाता था तब कैदियों द्वारा भगवान भोलेनाथ के मंदिर को देखकर सिर झुकाते हुए जयघोष लगा देने मात्र से उनकी सजाएं माफ हो जाती थी.

ऐसा एक बार नहीं हजारों मामलों में देखा गया. शिव मंदिर में कैदियों की सजा होती थी माफ अंग्रेजी हुकूमत हो गई थी परेशान लगातार कैदियों की सजा माफ होने जाने से अंग्रेजी हुकूमत परेशान हो गई. उन्हें यह समझ नहीं आ रहा था कि आखिर कैदी छूट क्यों जाते हैं. तब उन्हें भगवान भोलेनाथ की दयालुता एवं उनके चमत्कार के बारें में पता चला. इसके बाद उन्होंने जेल का दरवाजा पूर्व दिशा से हटाकर दक्षिण दिशा में कर दिया. तब कैदियों की सजा माफ होने का सिलसिला थमा ।

प्रथम स्थान प्राप्त होने पर सम्मान समारोह आयोजित कर किया सम्मानित

उन्नाव । विकासखंड सिकंदरपुर सरोसी क्षेत्र उच्च प्राथमिक विद्यालय गगनी खेड़ा के छात्र उदय कुमार साह पुत्र पंकज साह माता बेबी निवासी चंपा पुरवा गंगा घाट ने राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित परीक्षा में जनपद उन्नाव में प्रथम स्थान प्राप्त किया विद्यालय की प्रधानाध्यापिका से बात की गई तो उन्होंने बताया यह विद्यालय के लिए बहुत ही गौरव की बात है ।

इस अवसर पर छात्र उदय कुमार को सभी शिक्षकों ने माला पहना कर मिठाई खिलाकर शुभकामना दी इस अवसर पर इंचार्ज शिक्षिका प्रियंवदा द्विवेदी ने बहुत ही हर्ष पूर्वक बताया कि छात्र पूरे विद्यालय के लिए गौरव का कारण बना है उन्होंने बताया कि छात्र की सफलता में विद्यालय के शिक्षक परमजीत सिंह एवं रेखा यादव तथा अनीता गुप्ता आदि ने तैयारी करवा करके छात्र को प्रेरित किया । शिक्षिकाओं में दीक्षा मिश्रा जिज्ञासा सिंह प्रीतिका सिंह पूनम सहगल संध्या यादव सुनीता देवी नीतू दुबे ने बच्चों को शुभकामनाएं दी एवं उसके उज्जवल भविष्य की कामना की।

कुंवारी नदी में मिला युवक का शव, जांच में जुटी पुलिस

इटावा । जिले के चकरनगर में सोमवार शाम एक युवक का शव बिठोली के पास कुंवारी नदी में पड़ा मिला। युवक की शिनाख्त थाना सहसों क्षेत्र के कुआरपुरा गांव निवासी प्रीतम उर्फ सोनू परिहार (31) पुत्र राम औतार परिहार के रूप में हुई। पिता राम औतार ने बताया कि रविवार शाम पांच बजे उनका बेटा सोनू जानवरों को चराने निकला था। तब से वह वापस नहीं आया था। सोमवार सुबह सहसों थाने में उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई थी। सोमवार शाम

पुलिस ने नदी में बेटे का शव मिलने की सूचना दी। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया। मृतक की पत्नी उसे पांच साल पहले छोड़ कर चली गई थी। उसका एक छह साल का बेटा कृष्णा घर पर ही उसके साथ रहता था।

जानवर को बचाने में अनियंत्रित हुई कार डिवाइडर से टकराई, एक की मौत

महोबा । जिले में बुंदेलखंड एक्सप्रेस–वे में परथनिया के पास सोमवार की रात भीषण हादसा हुआ। बिहार के जनपद आरा से उज्जैन के महाकालेश्वर के दर्शन करने जा रहे लोगों से भरी कार सियार को बचाने के चक्कर में डिवाइडर तोड़कर घुस गई। हादसे में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो चचेरे भाइयों समेत चार लोग घायल हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी को जिला अस्पताल पहुंचाया । बता दें कि बुंदेलखंड एक्सप्रेस–वे पर लगातार हादसे हो रहे हैं। एक सप्ताह पहले 18 जुलाई को जालौन में खड़े ट्रक में पीछे से कंटेनर टकराने से हरियाणा निवासी चालक की मौत गई

थी। बिहार के जनपद आरा निवासी अमन चौरसिया ह्युंडई क्रेटा कार चचेरे भाई राजीव और अभिषेक चौरसिया, धर्मतल्ला रोड, बेरूमठ हावड़ा निवासी सूरज शर्मा और हावड़ा पश्चिम बंगाल निवासी सोहन झा के साथ किसी कार से आरा गए थे। सोमवार को सभी लोग कार से उज्जैन महाकाल के दर्शन करने जा रहे थे। तभी बुंदेलखंड एक्सप्रेस–वे पर परथनिया गांव के समीप 109 किमी प्वाइंट के पास अचानक निकले सियार को बचाने में कार अंसुलित होकर बीच में बने डिवाइडर को तोड़ते हुए घुस गई। कार कह रफ्तार इतनी तेज थी किह एयरबैग्स खुलकर फट गए और कार सवार सभी लोग पीछे की खिड़ती तोड़कर सड़क पर गिरे।

इस हादसे में कार सवार अभिषेक चौरसिया (19) की मौत हो गई, जबकि अन्य लोग घायल हो गए। दुर्घटना में कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुई है। सूचना पर पहुंची खरेला पुलिस ने घटनास्थल की जांच कर घायलों को अस्पताल भेजा। हादसे की सूचना पर मृतक के परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है।

अध्यापकों की पिटाई से हुई छात्र की मौत, परिजनों में मचा कोहराम

कन्नौज । जिले में अध्यापकों की पिटाई से छात्र की मौत की घटना सामने आई है। इस घटना से परिजनों में कोहराम मच गया। छिबरामऊ कोतवाली क्षेत्र के ग्राम मड्डिया कसावा निवासी कानपुर जहांगीर का पुत्र दिलशान खान आर एस इंटर कॉलेज में कक्षा 9 का छात्र था। जहांगीर के मुताबिक 23 जुलाई को दिलशान पढ़ने के लिए स्कूल गया था। आरोप है कि अध्यापकों ने घड़ी चोरी का आरोप लगाकर दिलशान की पिटाई कर दी। घर आने पर दिलशान ने घटना की जानकारी परिजनों को दी। कुछ देर बाद

उसे उल्टी होने लगी। परिजन छात्र को डॉक्टर के पास ले गए। डॉक्टर ने उसे कानपुर रेफर कर दिया गया। कानपुर में इलाज के दौरान मंगलवार को उसकी मौत हो गई।

बहराइच में 15 दरोगा बने इंस्पेक्टर, एसपी ने कंधे पर लगाया स्टार

बहराइच । जनपद के विभिन्न थानों में तैनात 15 दरोगा का शासन के आदेश पर प्रमोशन हुआ है। 15 उप निरीक्षकों का प्रमोशन करके शासन ने निरीक्षक बना दिया है। एसपी केशव चौधरी ने मंगलवार को प्रोन्नत पाए सभी 15 उप निरीक्षकों के कंधे पर स्टार लगाया और उनके उज्जवल भविष्य की कामना की। एसपी केशव चौधरी ने बताया कि जिले के विभिन्न थाने और चौकियों पर तैनात 15 वरिष्ठ उप निरीक्षकों का प्रमोशन किया गया है। जिसमें उपनिरीक्षक नरेंद्र सिंह, संतोष कुमार सिंह, चंद्र मोहन सिंह, श्री प्रकाश त्रिपाठी, संजय कुमार सिंह, संतोष कुमार

त्रिपाठी, अतीउल्लाह अंसारी, राजेंद्र प्रसाद यादव, अरुण कुमार त्रिगुनायक, मनोज कुमार सिंह, राम आशीष यादव, फिरोज अहमद, दुर्गविजय सिंह, बृजानंद सिंह और उपनिरीक्षक श्याम देव शामिल है। शासन से प्रोन्नत आदेश आने के बाद अपने कार्यालय में सभी उप निरीक्षकों के कंधे पर इंस्पेक्टर का स्टार लगाकर उन्हें सम्मानित किया गया और उनको शुभकामनाएं दी गई।

हाईवे पर ट्रक ने ऑटो में मारी टक्कर, सास की मौत, दामाद घायल

हमीरपुर । जिले में कानपुर–सागर हाईवे पर बड़ागांव निवासी एक युवक अपनी सास को लेकर ऑटो से इटरा मन्दिर में दर्शन के बाद उसके गांव चन्दपुरवा छोड़ने जा रहा था। तभी हिंदुस्तान युनिलीवर के पास हाईवे पर अज्ञात ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी। जिसमें महिला की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। वहीं घायल को इलाज के लिए सदर अस्पताल भिजवाया। भरुआसुमेरपुर कोतवाली क्षेत्र के बड़ागांव निवासी रामकुमार साहू उर्फ मुलायम अपनी सास ललिता पत्नी रामदास निवासी चन्दपुरवा को बजरंगबली मंदिर में दर्शन के लिए अपनी ऑटो में लेकर जा रहा था। सुबह करीब 6.30 बजे फैक्टरी एरिया में हिंदुस्तान युनिलीवर के सामने हाईवे पर महोबा की ओर से आ रहे अज्ञात ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी। जिससे ऑटो बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। साथ ही इसमें सवार रामकुमार की सास की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना की सूचना मिलने

पर थानाध्यक्ष भरत कुमार पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। वहीं घायल रामकुमार को इलाज के लिए सदर अस्पताल भेजा गया है। अचानक हुई इस घटना से परिजनों में कोहराम मच गया। बताया जा रहा है कि इटरा मन्दिर में दर्शन के बाद रामकुमार अपनी सास को गांव छोड़ने के लिए गया था।

घरेलू कलह के चलते युवक ने खाया जहरीला पदार्थ, हालत गंभीर

फतेहपुर । जनपद के बिंदकी कोतवाली क्षेत्र में घरेलू कलह के चलते एक युवक ने जहरीला पदार्थ खाकर आत्महत्या करने की कोशिश की बताते चलें कि बिंदकी कोतवाली क्षेत्र के माधवपुर गांव निवासी राकेश कुमार उम्र 42 वर्ष पुत्र बेचूलाल ने घरेलू कलह के चलते जहरीला पदार्थ खा लिया है जिससे उनकी हालत नाजुक बताई जा रही है इस घटना की सूचना जैसे ही परिजनों को

कोई तो कोहराम मच गया और आनन–फानन निजी वाहन से सरकारी स्वास्थ्य केंद्र बिंदकी में भर्ती कराया गया जहां पर चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद हालत नाजुक देख जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया है ।

शिक्षिका ने घर में दुपट्टे से फंदा लगा दी जान, जांच में जुटी पुलिस

जालौन । जिले के कोंच थाना क्षेत्र में परिषदीय विद्यालय की शिक्षिका ने मंगलवार की दोपहर में गल्ला मंडी परिसर स्थित आवास में दुपट्टे से फंदा लगा दी जान दे दी। पिता गल्ला मंडी में कर्मचारी हैं। पति की एट कस्बे में दुकान है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है। सीओ ने भी सीएचसी पहुंच कर घटना के बाबत जानकारी ली। गल्ला मंडी निवासी 30 वर्षीय

प्रिंसी कुशवाहा ने मंगलवार की दोपहर घर में दुपट्टे से फंदा लगाकर जान दे दी। मां जब लौटी तो प्रिंसी को फंदे पर लटका देख उसकी चीख निकल गई। चीख सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और उसे फंदे से उतारकर सीएचसी लेकर गए। वहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। प्रिंसी कोंच ब्लाक के गांव बस्ती के परिषदीय विद्यालय में सहायक अध्यापिका थी। पिता अशोक कुशवाहा कोंच गल्ला मंडी में कर्मचारी हैं और मंडी परिसर स्थित सरकारी आवास में रहते हैं। प्रिंसी का आवास भी पिता के बगल में है। मंगलवार को प्रिंसी के पति सौरभ का जन्मदिन था। वह सुबह का नाश्ता करके एट स्थित दुकान पर चला गया था। उसका बड़ा बेटा छह साल का है, वह स्कूल गया था। तीन माह के दूसरे बच्चे के साथ प्रिंसी घर पर थी। आत्महत्या के कारणों का पता नहीं चल सका है।

25 हजार का वांछित इनामी गिरफ्तार, गांजा और तमंचा बरामद

उन्नाव । पुलिस अपराधियों की धर पकड़ के लिए अभियान चला रही है। इसी कड़ी में मंगलवार को माखी पुलिस 25 हजार के इनामिया अपराधी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने ररुकरना चौराहे से मुखबिर की सूचना पर गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी के पास से गांजा और अवैध तमंचा बरामद किया है। पुलिस ने आरोपी को न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया। जहां से उसे जेल भेज दिया गया। कानपुर नगर के फहीमाबाद निवासी मोहसिन पुत्र आमीन पर कई आपराधिक मुकदमे पंजीकृत है। आरोपी के खिलाफ हरदोई में 25 हजार का इनाम था। इनामिया की तलाश में उन्नाव पुलिस के साथ ही स्वाट टीम लगी थी। मुखबिर की सूचना पर थानाध्यक्ष रामआसरे, स्वाट टीम प्रभारी प्रदीप कुमार ने रऊकरना चौराहे के पास आरोपी को दबोच लिया।तलाशी के दौरान उसके पास से डेढ़ किलो गांजा, एक अवैध तमंचा 312 बोर, एक जिन्दा कारतूस बरामद किया। पुलिस ने इनामिया के पकड़े जाने की सूचना हरदोई पुलिस को भी दी।

पुलिस ने मोहसिन के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करते हुए न्यायालय के समक्ष पेश किया। जहां उसे जेल भेज दिया गया। पकड़ा गये इनामिया मोहसिन पर 12 मुकदमे दर्ज हैं। आरोपी के खिलाफ कानपुर, हरदोई, उन्नाव जनपद में लूट, चोरी, डकैती, एनडीपीएस एक्ट के साथ

ही गम्भीर धाराओं में मुकदमे दर्ज हैं। आरोपी गांजे का चोरी छिपे बडे पैमाने पर कारोबार कर रहा था। एसपी दिनेश त्रिपाठी ने मोहसिन को पकड़ने वाली टीम की सराहना की है।

एचबीटीयू परिसर में लगाई गई दो हरिशंकरी वाटिकाएं, लगाए गए 101 पौधे

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार हरिशंकरी वाटिका में लगाये जाते हैं श्रेष्ठ लाभदायी पौधे।
पीपल, बरगद व पाकड़ के मिश्रित रोपण को कहा जाता है हरिशंकरी, एचबीटीयू में लगाए गए 101 पौधे।

कानपुर। मंगलवार को एचबीटीयू पश्चिमी परिसर में हरिशंकरी रोपण किया गया। इस वृहत वृक्षारोपण में विभिन्न प्रकार के लाभदायी पौधे रोपित किये गए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राज्यमंत्री वन पर्यावरण, जन्तु उद्यान एवं जलवायु परिवर्तन विभाग उ.प्र. शासन, के.पी. मालिक रहे। इस दौरान श्री मालिक ने श्रेष्ठ लाभदायी पौधों का रोपण किया।

परिसर में दो हरिशंकरी वाटिकाएँ स्थापित की गईं। पीपल, पाकड़, गूलर, मौलश्री, अशोक, कचनार, नीम, कटहल, हरश्रृंगार व शरीफ़ा आदि प्रजातियों के 101 पौधों का रोपण किया गया। पीपल, बरगद, पाकड़ के सम्मिलित रोपण को हरिशंकरी कहते हैं।

हिन्दू मान्यता में पीपल को विष्णु व बरगद को शंकर का स्वरूप माना जाता है। पौराणिक मान्यताओं में पाकड़ वनस्पति जगत का अधिपति व नायक है। यज्ञ कार्यों हेतु श्रेष्ण छाया वृक्ष है। इस प्रकार हरिशंकरी की स्थापना एक परम पुण्य व श्रेष्ठ परोपकारी कार्य है।

जुगुल देवी सरस्वती विद्या मंदिर के छात्र–छात्राएं उत्साह के साथ वृक्षारोपण कार्यक्रम में शामिल रहीं। मुख्य अतिथि ने छात्र–छात्राओं को विशिष्ट अवसरों पर पौध रोपण और पौधों की सुरक्षा हेतु प्रेरित किया।

कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों

को मा. मंत्री जी ने गंगा स्वच्छता की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि सभी लोग गंगा की निर्मलता व अविरलता बनाये रखने हेतु हर संभव प्रयास करेंगे।

वृक्षारोपण के बाद राज्यमंत्री ने सर्किट हाउस में मंडल के विभागीय अधिकारियों के साथ वृक्षारोपण महा अभियान 2022 की समीक्षा बैठक की।

बैठक में सभी विभागों द्वारा रोपित किये गए पौधों की सिंचाई व सुरक्षा व्यवस्था हेतु निर्देशित किया गया। ताकि रोपित पौधों की सफलता सुनिश्चित हो सके।

इस वृक्षारोपण कार्यक्रम में मुख्य वन संरक्षक, कानपुर मंडल एवं कानपुर मंडल के समस्त प्रभागीय वन अधिकारी तथा गंगा विचार मंच के पदाधिकारी, गंगा टास्क फ़ोर्स व एचबीटीयू के अधिकारी मौजूद रहे।

डीएम की अध्यक्षता में स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार वितरण कार्यक्रम हुआ आयोजित।।

उरई–(जालौन)–जिलाधिकारी चाँदनी सिंह की अध्यक्षता में ष्स्वच्छ विद्यालय पुरस्कारष् 2021–22 का वितरण कार्यक्रम का आयोजन रानी लक्ष्मीबाई सभागार विकास भवन में किया गया। शिक्षा के अन्तर्गत भारत सरकार के द्वारा दिए गए निर्देशों के क्रम में जनपद के सभी विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों द्वारा विद्यालयों में उपलब्ध भौतिक अवस्थापना सुविधाओं का ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से पंजीकरण किया गया। जिनका जिला प्रशासन ने टीम गठित कर ऑनलाइन एवं भौतिक सत्यापन किया गया। सत्यापन टीम ने कुल 38 विद्यालयों का चयन किया गया जिसमें 08 विद्यालय ओवर ऑल कैटेगरी के 30 विद्यालय सब कैटेगरी के चयनित किया गये आयोजित कार्यक्रम के अवसर पर जिलाधिकारी द्वारा ऑपरेशन कायाकल्प में अच्छा कार्य करने वाले 09 ग्राम प्रधानों एवं बेसिक शिक्षा के 09 अध्यापकों तथा 01 खण्ड शिक्षा अधिकारी एवं 25 विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों को प्रमाण पत्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। उत्कृष्ट कार्य करने वाले ग्राम प्रधान हरशंकरपुर अंशुमा त्रिपाठी, ग्राम प्रधान छौंक लज्जा देवी, ग्राम प्रधान छौना सुरेन्द्र कुमार राठौर, ग्राम प्रधान कीरतपुर पवनदीप निषाद, ग्राम प्रधान लौना अर्चना देवी, ग्राम प्रधान कुरौती ज्येठी, ग्राम प्रधान शिवनी बुजुर्ग शिवराज कुशवाहा, ग्राम प्रधान बसोव नन्दकिशोर राजपूत, ग्राम प्रधान ऐरी ओमकार पाल के अलावा बेसिक शिक्षा विभाग के 09 अध्यापक यथा अजय पाण्डेय प्रा०वि० शंकरपुर शलमा बानो उ०प्रा०वि० छौंक, नितिन आनन्द पाल प्रा०वि० छौना, संदीप कुमार प्रा०वि० ईगुई कला, ओमनारायण दीक्षित उवप्रा०वि० लौना, आराधना सिंह उवप्रा०वि० कुरौती, महेश चन्द्र निरंजन उ0प्रा0वि० शिवनी बुजुर्ग, सुरेन्द्र सिंह निरंजन क०प्रा०वि० बसोव, नरेन्द्र सिंह उवप्रा०वि० चम्हन मिनौरा को प्रमाण–पत्र व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में डी०बी०टी० के अन्तर्गत उत्कृष्ट कार्य करने वाले खण्ड शिक्षा अधिकारी जालौन, नगर शिक्षा अधिकारी नगर क्षेत्र कोंच एवं खण्ड शिक्षा अधिकारी डकोर को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। जिलाधिकारी ने सम्मानित किए गए समस्त प्रधानों, प्रधानाध्यापकों आदि सभी का उत्साहवर्धन किया और सभी को बधाई दी और साथ ही ग्राम प्रधानों एवं अध्यापकों एवं प्रधानाचार्य को विद्यालयों में बच्चों की शिक्षा को लेकर और अधिक बेहतर कार्य करने की अपेक्षा की। उन्होंने कहा कि बच्चों की शिक्षा से ज्यादा महत्त्वपूर्ण कुछ नहीं है उनको सारी सुविधा मिले वह देश का भविष्य है। उन्होंने सम्मानित किए गए सभी को बधाई देते हुए कहा कि उत्कृष्ट कार्य करने वाले समस्त ग्राम प्रधानों एवं प्रधानाध्यापकों को भी इसी मंच से सम्मानित करने की योजना बनाई जाए जिससे उनका भी उत्साहवर्धन हो तथा वह और भी अच्छा कार्य करें। उन्होंने समस्त प्रधानाध्यापक को निर्देशित करते हुए कहा कि बच्चों को अलग से स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जाए।